सिनेमा में... खाना, शोर नहीं चलेगा!

भारत में कहीं भी फिल्म देखते समय शोरगुल और परेशान करने वाली हरकतें नई नहीं हैं। कुछ साल पहले की बात है, एक फिल्म में ऑन स्क्रीन किस-सीन और रोमांस के बीच मोबाइल ने किस तरह मजा किरकिरा किया था। सीन में हीरोइन ने चुंबन करने के पहले ही होंठ भींच लिए और प्रेमी से अलग होते हुए मोबाइल की मांग कर डाली थी। प्रेमी का मजा खराब हो गया और फिल्म देखने वाले हंस-हंस कर लोटपोट हो गए।

दरअसल, किसी फिल्म को बिना किसी परेशानी के आराम से देखने में ये बहुत ही मुश्किल खड़ी करते हैं और अब तो यह आम बात हो गई है कि लोग फिल्म के दौरान इस छोटे-से गैजेट के बटन दबाते रहते हैं और कई बार तो ऐसा होता है कि वे ऊंची आवाज में बात करने लग जाते हैं। कभी-कभी वे दुकान से बात करते हैं और फिल्म के डायलाग की हंसी उड़ाते हुए जोर-जोर से बताते हैं।

इससे ज्यादा और बुरा क्या होगा कि वे फिल्म को पिकनिक स्पॉट समझने लगे हैं, जहां सभी प्रकार के खाने-पीने की चीजें सिनेमा हॉल के अंदर ही मिल जाती हैं। मुझे तो

वेनिस से गौतमन भास्करन

चेन्नई के थिएटर में गरमा-गरम एक प्लेट बिरयानी तक ऑडिटोरियम में परोसी है और कई कप चाय पर चाय की तो बात ही मत करो। इंग्लैंड के मेरे दोस्त ने बताया कि स्क्रीन पर फिल्म देखते हुए कहानी पर ध्यान देना मुश्किल हो गया है। जब उसके आसपास के लोग पॉपकॉर्न चबाते हुए अजीब आवाजें निकालते हैं। वे बहुत ही परेशान करते हैं। हम जानते हैं कि जब भी अपने 'हीरो' से फिल्म की शुरुआत होती है, तो चाहने वाले सीटी बजा कर थिएटर गुंजा देते हैं और सिनेमा हॉल के गलियारों में नाचते भी हैं।

चेन्नई का सत्यम सिनेमा नई शुरुआत कर रहा है। वह

'डू नॉट डिस्टर्ब' के टैग के साथ फिल्म शो दिखाने की योजना बना रहा है, जिसमें साफ संदेश होगा कि अपने पास में बैठे लोगों को परेशान मत करो। सत्यम सिनेमा के हेड **भावेश शाह** कहते हैं कि वे जल्द ही कांसेप्ट पर काम करेंगे, जो **'आप और फिल्म'** थीम पर होगा। वे कहते हैं कि मणिरत्नम जैसे निर्देशकों की फिल्में उनके थिएटरों में क्यों नहीं चलीं। जाहिर है, लोग हंगामे से परेशान थे। निश्चित रूप से यहां आने वालों के साथ कुछ गलत नहीं हुआ, फिर भी फिल्म का मजा नहीं ले पाते। निर्माताओं को भी चाहिए था कि हम ऐसा माहौल बनाएं, जहां बस आप अकेले हों और फिल्म।

कोलकाता में बड़े-बड़े डायरेक्टर- सत्यजीत रे, मृणाल सेन और यहां तक कि जीन रेनोयर (जब वे 'द रिवर' की शूटिंग कर रहे थे) की फिल्मों में भी लोग सलीके से पेश आते रहे हैं, चाहे कोई भी सिनेमा घर हो। मैं मानता हूं कि ऐसा समय वापस आ रहा है, जब नए सुधार किए जाने चाहिए। सत्यम की तरह हरेक शो, हर रोज बिना किसी परेशानी के देखने की कोशिशें होने लगें, जहां **'डू नॉट डिस्टर्ब'** की बात लोग समझने लगें। फिलहाल, **'डू नॉट डिस्टर्ब'** के साथ फिल्म का मजा लेने के लिए अंग्रेजी फिल्मों को चुना जाएगा, जिसमें देर से आने वालों को रोकेंगे, वहीं फिल्म देखने के दौरान कोई खाना-पीना नहीं चलेगा। कोशिश है कि फिल्म देखना सुकून भरा अनुभव बनाया जाए। जो भी इस नियम को तोड़ेगा, उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया जाएगा और संभव है, जुर्माना भी लगा दिया जाए। मैं खुश हूं कि फिल्म देखने का अनुभव खुशनुमा बनाने के लिए सत्यम जैसा सोचना शुरू हो गया है। ऐसा लगता है कि एक समाज के रूप में हम दूसरे व्यक्ति की सुविधा और उसकी गोपनीयता को बेवजह छेड़ रहे हैं। शाहरुख क्या कह रहा है या अनुष्का शर्मा क्या कह रही हैं, हर कोई जानना-सुनना चाहता है। किसी भी व्यक्ति की बेमतलब की बड़बड़ाहट या फोन बजने पर आने वाली आवाजें सुनने के लिए कोई मजबूर नहीं है। यह असभ्यता है। यह कितना अचरज भरा है कि ऐसा व्यवहार गलत मानने के बजाय आम हो गया है। ●